Research Paper Hindi

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में विम्बविधान
(Shamsher Bahadur Sinh Ki Kavitao Me Vimbvidhan)

Bimla | Assistant Professor in Hindi, C. R.M. Zaat P. G. Collej, Heesar.

कवि की काव्य भाषा के निर्धारक तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण है – 'बिम्ब'। शमशेर ऐसे कवित हैं जो बिम्बों के जरिए ही अपनी बात कहना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि शमशेर जिन अनुभवों को व्यक्त करते हैं वे ज्यादातर ऐन्द्रिय होते हैं। इस ऐन्द्रियता के कारण ही उनकी भाषा ऐसे रूप ग्रहण कर लेती है जिसका सम्प्रेषण अधिकतर प्रत्यक्षीकरण के स्तर पर होता है।

वस्तुतः भाषा की प्रकृति ही विम्बात्मक होती है पर भाषा चूंकि दैनिक प्रयोग में मंतजी और घिसती रहती है। इसीलिए धीरे–धीरे शब्द का चित्रात्मक स्वरूप नष्ट होता जाता है और फिर वह निजी भाव या विचार का प्रतीक मात्र रह जाता है और काव्य–भाषा के निर्माण का पहला चरण वहीं से शुरू होता है। कवि की पहली कोशिश यह होती है कि वह शब्द को फिर से उसकी खोई हुई चित्रात्मकता प्रदान करें। ऐसा करने के लिए उसे भाषा के स्वरूप को थोड़ा बदलना पड़ता है बहुत से स्थलों पर छूट लेनी होती है और प्रकृति और जीवन के नए क्षेत्रों में प्रवेश करना पड़ता है।

शमशेर जब ऐसा करते हैं तो हिन्दी काव्यभाषा की पूरी परम्परा से लाभ उठाते हुए भी उसे बहुत कुछ बदलने की कोशिश भी करते हैं। ऐसा करते हुए शमशेर वस्तुतः तीन अलग–अलग परम्पराओं का उपयोग करते हैं :

1. आधुनिक हिन्दी काव्य की परम्परा, जिससे सम्पूर्ण छायावादी काव्यभाषा का विकास हुआ और विशेषता निराला की काव्यभाषा इसके अन्तर्गत आती है जिसका थोड़ा बहुत प्रभाव शमशेर की शुरू की कविताओं पर है।

2. उर्दू कविता की परम्परा – जिसके अनेक मुहावरे और प्रतीक शमशेर की काव्यभाषा में ढूंढे जा सकते हैं।

3. पश्चिम की आधुनिकवादी काव्य परम्परा जिसमें मुख्य रूप से फ्रांस के प्रतीकवादी कवि और अंग्रेजी के इलिपट, एजरापाऊन्ड और ई0ई0 कमिंग्स के भाषा सम्बन्धी प्रयोगें से शमशेर ने पर्याप्त लाभ उठाया है।

विशेष रूप से कर्मिंग्स के विलक्षण प्रयोगों के प्रभाव की बात तो शमशेर ने स्वयं 'दूसरा सप्तक' के वक्तव्य में स्वीकार की है। बिम्ब :
कबूतरों ने एक गजल गुनगुनाई
मैं समझ न सका रदीफ काफिए क्या थे
इतना खफीफ इतना हल्का, इतना मीठा उनका दर्द था
मैं उसके पादों पर कोई सिजदा न बना सका
क्योंकि मेरे झुकते न झुकते
उसके पांवों की दिशा मेरी आंखों को लेकर खो गई थी।

शमशेर जिस भाव को मूर्त या प्रत्यक्ष करना चाहते हैं उसके निर्माण में इन शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह शब्द बेशक उर्दू की परम्परा से आए हुए हैं और हिन्दी के पाठक के लिए चाहे वे किसी बाहरी परम्परा से आए हुए हैं स्वयं शमशेर के लिए वे एक ही व्यापक परम्परा के अंग है जिसमें हिन्दी और उर्दू दोनों ही घुली मिली है।
मैं इस तरह मुस्कराया
जैसे शाम के पानी में
डूबते पहाड़ गमगीन मुस्कराते हैं

गमगीन शब्द ही मुस्कुराहट के पीछे छिपी हुई पीड़ा को गहराई प्रदान करता है। बिम्बों में 'फ्री' ऐसो. सियेशन' पद्धति का प्रयोग है। जिसका प्रयोग आधुनिक अंग्रेजी कवितियों ने भी किया है। इस शैली में एक बिम्ब दूसरे बिम्ब से प्राय अलग दिखाई पड़ता है। उदाहरण –
''टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पांव के नीचे,
पत्तियां।''

चाय की पतियां चित्र संकेत है। जिनको जोड़ने वाला कोई प्रत्यक्ष मनोभाव दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। पर इन सबको एक साथ रखकर शमशेर ने किसी गहरे भाव की व्यंजना करने की कोशिश की है।
''मैं निराला के राम का एक आंसू,
जो तीसरे महायुद्ध के कठिन लोहपर्दों को
एटमी सुई सा पार कर गया पालल तक।

'राम के आँसू' का यह बिम्ब शमशेर, 'निराला की राम की शक्ति पूजा' के भीतर ले आए हैं और इस प्रकार इस बिम्ब का बहुत ही अच्छा इस्तेमाल किया है।
पश्चिम में काले और सफेद फूल है और पूरब में पीले और लाल,
उत्तर में नीचे कई रंग के और हमारे यहां चम्पई सांवले।
और दुनिया में हरियाली कहां नहीं,
जहां भी आसमान बादलों से जरा भी पौंछे जाते हो।
और आज गुलदस्तों में रंग–रंग के फूल सजे हुए हैं,
और आसमान इन खुशियों का आईना है।

शमशेर की कविता में आकर ये रंगों के विश्वात्मक प्रयोग पूरे मानव समुदाय के रंगों के चित्र संकेत बन गए हैं और इस तरह यहां पूरी भाषा एक बिल्कुल नया रूप धारण कर लेती है। मेरी देहली से प्रह्लाद की तपस्याएं दोनों दुनियाओं की चौखट पर युद्ध के हिरण्यकश्यम को चीर रही है।

शमशेर के कुछ प्रमुख शब्द है जिनमें बिम्ब दिखाई पड़ते हैं – शाम, चाँदनी, सूर्य, फूल, पत्थर, पहाड़, गुलाब, बसन्त, मौन इत्यादि 'शाम' संभवतः शमशेर का सबसे प्रिय शब्द है। केवल इस एक शब्द को लेकर शमशेर ने अनेक बिम्बों की रचना की है, उदाहरण :
'एक पीली शाम
पतझड का जरा अटका हुआ पता'
ये शाम है
कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का।
नींबू का नमकीन सा शरबत शाम.... बहुत दूर तक बजती हुई शाम।'
'मैं इस तरह मुस्कराया
जैसे शाम के पानी में
डूबते पहाड़ गमगीन मुस्कराते हैं।

वैसे तो 'शाम' को लेकर और भी बहुत सी पंक्तियां शमशेर की कविता में ढूंढी जा सकती है। इसी प्रकार हम 'चांदनी' शब्द को लेकर भी अनेक बिम्बों की रचना शमशेर के यहां देख सकते हैं:
'एक नीला आईना
बेठोस सी यह चांदनी,
चांदनी में घुल गए हैं
बहुत से तारे बहुत कुछ।

उन्होंने बिम्बों के माध्यम से 'चांदनी' का 'मानवीकरण' कर दिया गया है। इन दोनों के अर्थ को थोड़ा व्यापक बनाती है।
''नीलजल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।

कवि ने 'सूर्य' के माध्यम से उसकी लाली, आकार, गतिमयता को सूचित करने वाले कई बिम्ब लाए गए हैं।
'अब
हो उठा है मौन का डर
और भी मौन'

इस कविता में कवि ने शोक के वातावरण का चित्रण किया है और यह 'मौन' दरअसल मृत्यु के बाद का मौन है।

शमशेर कुछ पुराने शब्दों का भी नए ढंग से प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए 'कोलाहल' शब्द जो 'छायावादी' कविताओं में मुख्य रूप से 'प्रसाद' की कविताओं में मिलता है। शमशेर की पंक्ति है–
'वह कोलाहल जो कोयलों से भरा है
सुनकर
तू विक्षुब्ध हो जाता
क्या उपनिषदों का शोर
उसे दबा पाता।'

यहां कवि ने 'कोयलों' से भरा 'कोलाहल' का बिम्ब अत्यन्त रोमाण्टिक बिम्ब है और इसके सामानन्तर यदि हम प्रसाद का यह बिम्ब रख दे तो इसकी समानियत और स्पष्ट हो जाएगी।
'अम्बर चुखी हिम श्रृगों से
कलख कोलाहल साथ लिए
विद्युत की प्राणमयी धारा
बहती जिसमें रसधार लिए।

परन्तु 'शमशेर' के 'कोलाहल' का बिम्ब प्रसाद से थोड़ा भिन्न इसलिए हो जाता है कि उस 'कोलाहल' की टक्कर एक और बिम्ब से हो रही है – 'उपनिषदों का शोर' और वस्तुतः कहीं इसमें यह संकेत भी है कि उपनिषदों के शोर (ज्ञान) से भी ज्यादा शक्ति कोयलों के कोलाहल (प्रकृति) में है। जैसा कि

मुक्तिबोध ने लिखा है –

'शमशेर की कला एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार की कला है' और एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार कभी भी चित्र का पूरा खाका प्रस्तुत नहीं करता वह केवल कुछ आवश्यक रेखाएं या रंगों के संकेत भर कर देता है और उसी के द्वारा पूरा आकार उभारने की कोशिश करता है। शमशेर भी करते हैं। इसीलिए उनके यहां शब्द ज्यादातर किसी गहरे संकेत को लेकर आते हैं, और उनके बिम्बों में भी यह सांकेतिकता ही प्रमुख होती है।

कवि की बिम्ब योजना की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वह हमेशा अपनी भौतिकता का अंशतः लोप करके किसी सूक्ष्म भाव की ओर संकेत करता है।

REFERENCES

1. दूसरा सप्तक (सम्पादक अज्ञेय) में अपनी कविताओं के आरम्भ में शमशेर का वक्तव्य। । 2. कुछ और कविताएं – शमशेर – पृ0 5 । । 3. वही पृ0 54 द्य 4. कुछ और कविताओं की भूमिका में शमशेर का वक्तव्य – उर्दू में मेरी दिलचस्पी शुरू से रही है। दरअसल मैं मानता हूं कि उर्दू और हिन्दी साथ–साथ चलती है। दोनों को अलग करके देखना गलत है – एकदम अप्रासंगिक। । 5. कुछ और कविताएं – शमशेर – पृ0 52 । 6. वही पृ0 51 । 7. वही पृ0 21 द्य 8. वही पृ0 21 । 9. वही पृ0 104 । 10. वही पृ0 31 । 11. कविताएं – सम्पादक अजित कुमार 1958, पृ0 85 द्य 12. कुछ और कविताएं – शमशेर पृ0 56 । 13. वही पृ0 13 । 14. वही पृ0 29 । 15. वही पृ0 13 । 16. वही पृ0 15 । 17. वही पृ0 7 । 18. वही पृ0 14 । 19. चुका भी हूं नहीं मैं, शमशेर पृ0 21 । 20. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, लज्जासर्ग । 21. शमशेर – (सम्पादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना) मलयज का वक्तव्य पृ0 43 ।